

मददगार हाथ

सुज़ाना हैल्डेन



मदद करने वाले हाथ : सुज़ाना हैल्डेन
Helping Hands : Suzanne Haldane
अनुवाद : अरविन्द गुप्ता

© भारत ज्ञान विज्ञान समिति

रेखांकन : अविनाश देशपांडे एवं अन्य
लेजर ग्राफिक्स : अभय कुमार झा

छठा संस्करण : वर्ष 2007

मूल्य : 15 रुपये

इस किताब का प्रकाशन भारत ज्ञान विज्ञान समिति ने देश भर में चल रहे साक्षरता अभियानों में उपयोग के लिए किया गया है। जनवाचन आंदोलन के तहत प्रकाशित इन किताबों का उद्देश्य गाँव के लोगों और बच्चों में पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना है।

Published by Bharat Gyan Vigyan Samiti
Basement of Y.W.A. Hostel No. 11, G-Block Saket, New Delhi - 110017
Phone : 26569943, Fax : 26569773, Email: bgvs_delhi@yahoo.co.in, bgvsdelhi@gmail.com
Printed at Sun Shine Offset, New Delhi - 110018



मदद करने वाले हाथ

विकलांग लोगों की बंदर कैसे मदद कर सकते हैं।

यह ग्रेग है। उसके साथ है विली। विली एक मादा कापूचिन बंदर है। विली हमेशा ग्रेग के साथ ही रहती है। विली, ग्रेग की सहायक भी है।

वैसे ग्रेग का एक पालतू कुत्ता भी है। परंतु विली एक पालतू कुत्ते से कहीं अधिक उपयोगी है। वो हर समय ग्रेग के पास रहती है। बहुत से काम ग्रेग कभी नहीं कर पाएगा। विली इन कामों में ग्रेग की मदद करेगी।

वैसे ग्रेग खुशमिजाज और हंसमुख सत्रह साल का एक नौजवान लड़का है। आजकल वो अपना पूरा दिन ही व्हील-चेयर पर गुजारता है। पर हमेशा से वो ऐसा नहीं था। पहले वो अपनी उम्र के लड़कों की तरह ही बहुत सक्रिय रहता था। उसे अपने दोस्तों के साथ कुश्ती लड़ना और गेंद से खेलना पसंद था। वो अपने परिवार के साथ नाव चलाता था, मछलियां पकड़ता था और पहाड़ों की सैर करता था।

परंतु एक दिन अचानक उसकी जिंदगी हमेशा के लिए बदल गई। फुटबाल का खेल खत्म होने के बाद ग्रेग और उसका दोस्त नदी की सैर करने गए। गर्मी से छुटकारा पाने के लिए उन्होंने तैरने की सोची। ग्रेग ने जैसे ही पानी में छलांग लगाई उसका सिर पानी की सतह से कई फीट नीचे एक पत्थर से जा टकराया।

उसके बाद क्या हुआ यह उसे अच्छी तरह याद है। “मैं सारी कोशिश के बाद भी पानी में से निकल नहीं सका। मैं किसी तरह अपने आपको पानी में डूबने से बचा सका परंतु तैर नहीं सका। मेरे दोस्तों ने देखा कि मैं मुसीबत में फंसा हूं और उन्होंने मुझे पानी में से बाहर खींच कर निकाला। कितनी चोट आई है इसका मुझे कोई अंदाज नहीं था। बस मुझे यह पता था कि मैं अब चल नहीं सकता हूं।”

मेरे एक दोस्त ने मुझसे आराम करने के लिए कहा। “शायद तुम्हारी कोई नस दब गई है और तुम जल्द ही ठीक हो जाओगे”, उसने कहा। परंतु मुझे लगा कि कोई भारी गड़बड़ है और मैंने उनसे एम्बुलेंस बुलाने के लिए कहा।

ग्रेग को तुरंत अस्पताल ले जाया गया। जांच के बाद डाक्टरों ने ग्रेग के माता-पिता को बताया कि ग्रेग की गर्दन टूट गई है और उसकी रीढ़ की हड्डी में चोट आई है। उसके स्नायुओं को भी नुकसान पहुंचा है। स्नायुओं का ताना-बाना जो कि मस्तिष्क को, मांसपेशियां चलाने की सूचना देता है, अब काम नहीं कर रहा था। ग्रेग अब अपने हाथ-

पांव नहीं चला पाएगा। उसके कंधों से नीचे के शरीर ने अब काम करना बंद कर दिया था। एक ही क्षण में वो क्वाडरीप्लेजिक हो गया था - यानि उसके हाथों और पैरों ने काम करना बंद कर दिया था। कोई दूसरा इंसान उसके हाथ-पैर हिला सकता था, परंतु यह काम वो खुद नहीं कर सकता था।

ग्रेग ने ढाई महीने अस्पताल में गुजारे। धीरे-धीरे वो अपने शरीर की इस नई स्थिरता का अभ्यस्त हो गया। अब उसे पता चला कि हम शरीर के हिलने-डुलने के इतने आदी हो गए होते हैं कि हम उसे एकदम सामान्य घटना मानते हैं। उदाहरण के लिए, अगर उसे कहीं खुजली होती है तो वो खुद खुजला नहीं सकता है। किसी दूसरे को उसे खुजलाना पड़ता है। पलंग पर लेटकर करवट लेने का साधारण काम भी उसके लिए करना असंभव है - उसके लिए भी उसे किसी दूसरे का सहारा चाहिए। वो अभी भी समझ सकता है, महसूस कर सकता है और सोच सकता है परंतु कंधों के नीचे का शरीर वा हिला नहीं सकता है। उसे ऐसा लगता है जैसे उसका शरीर सीमेंट-कंक्रीट के प्लास्टर में जम गया हो।

“जब मुझे बताया गया कि मैं सारी ज़िंदगी के लिए अपंग हो गया हूं, तो पहले तो मुझे बहुत गुस्सा आया”, ग्रेग ने कहा। “मैं इतनी बेवकूफी कैसे करी?” वो बार-बार, यह सवाल, अपने आप से पूछता। “मुझे उस नदी के बारे में कुछ नहीं पता था। नदी में कूदने से पहले मुझे पानी की गहराई के बारे में पता लगाना चाहिए था।”

“इस अनहोनी घटना के झटके से उबरने के बाद मैं सोचने लगा कि शायद आधुनिक चिकित्सा पद्धति में इसका कोई इलाज हो। इतने सारे लोग अस्पताल में मेरी देखभाल के लिए थे और मेरे लिए इतना अधिक किया जा

रहा था कि मुझे उदास होने का समय ही नहीं मिला। परंतु जब मुझे बताया गया कि मैं कुछ ही दिनों में मुझे घर जाना पड़ेगा तो मैं उदास हो गया।”

उसके मित्रों ने उसका मनोबल ऊंचा करने और उसे हंसाने के कई प्रयास किए। एक दिन उसके सभी मित्र सिर के बाल मुंडवाकर उससे अस्पताल में मिलने आए। हंसने जैसी कुछ चीजें अभी भी बाकी बची थीं जिन्हें ग्रेग कर सकता था। वो जल्दी ही समझ गया कि उसकी स्थिति में हंसना और मज़ाक करना बेहद फ़ायदेमंद होगा।

अस्पताल के बाद ग्रेग को नौ महीने एक रीहैबिलिटेशन केंद्र में गुजारने पड़े। वहां पर उसे अपने जैसे और कई लोग मिले। उसमें से कई को सड़क दुर्घटनाओं में, कुछ को गिरने से और कुछ को फुटबाल खेलते हुए चोट लगी थी। इस माहौल में उसे अपनी नई ज़िंदगी से जूझने के कई महत्वपूर्ण सबक सीखने को मिले।

उसे बिजली से चलने वाली व्हील-चेयर को खुद चलाना सिखाया गया। हाथों के उपयोग की बजाए वो अपने मुंह में लगी एक नली में फूंक कर, व्हील-चेयर को चलने का आदेश दे सकता था।

उसकी व्हील-चेयर पर एक मोटी प्लास्टिक की तख्ती लगी थी। वो काफ़ी उपयोगी थी। ग्रेग उस तख्ती पर आराम से अपने हाथों को रख सकता था। वो उस तख्ती पर अन्य उपयोगी चीजें जैसे कैसिट-प्लेयर आदि को भी रख सकता था।

यहां पर ग्रेग ने टेलीफोन, कैसिट-प्लेयर और कम्प्यूटर भी चलाना सीखा। वो रबर के सिरे वाली धातु की एक डंडी को अपने दांतों से पकड़कर, सिर को हिलाकर अलग-अलग बटन दबा सकता था।

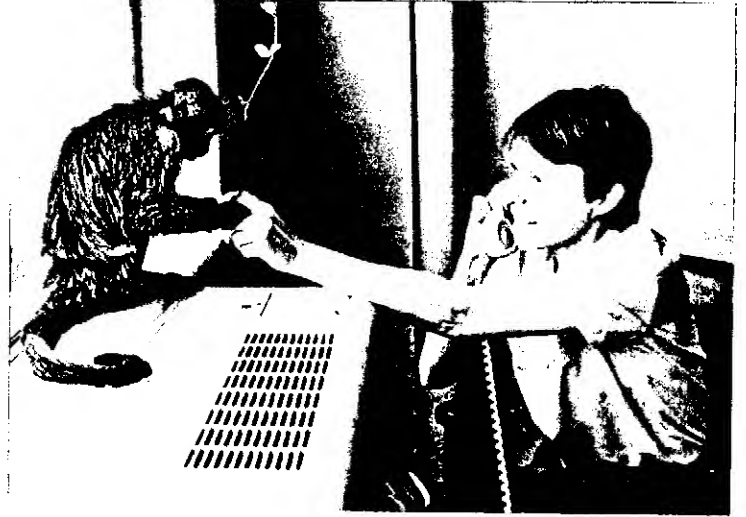
अपनी अशक्त हालत को स्वीकार करने और नए शरीर से कुछ कुशलताएं सीखने के बाद, ग्रेग जल्दी से जल्दी

अन्य लोगों पर अपनी निर्भरता को कम करने के बारे में सोचने लगा। दुर्घटना के तुरंत बाद मां ने ग्रेग की देखभाल करने के लिए अपनी नौकरी छोड़ दी। परिवार के अन्य सदस्य भी ग्रेग की सहायता करने को पूरी तरह तैयार थे। परंतु ग्रेग दिन का कुछ समय अकेले ही, बिना परिवार की मदद के गुजारना चाहता था।

ग्रेग के कमरे को ऐसा बनाया गया जिससे कि वो अपनी व्हील-चेयर से बेरोक-टोक कमरे में आ-जा सके। किसी ने उसे यह भी बताया कि डा. मेरी जोन विलियर्ड नाम की मनोचिकित्सक, उसके जैसे मरीजों की मदद के लिए कुछ शोध कर रही हैं। वो क्वाड्रेप्लेजिया से अशक्त मरीजों की सहायता के लिए बंदरों को ट्रेन कर रही हैं। बंदर अशक्त लोगों के लिए वो काम करेंगे जिन्हें वो लोग खुद नहीं कर पाते हैं।

डाक्टरी की उपाधि प्राप्त करने के बाद डा. विलियर्ड, गंभीर दुर्घटनाओं के शिकार मरीजों के साथ काम करने लगीं। वो मरीजों को उनकी विकलांगता को स्वीकार करने और एक नई जीवन प्रणाली शुरू करने में सहायता करतीं।

1977 में उन्होंने एक नौजवान क्वाड्रीप्लेजिक युवक के साथ काम करना शुरू किया। वो खुद कितना थोड़ा काम कर पाता था यह देखकर उन्हें बड़ी हैरानी हुई।



5

इस अनुभव ने डा. विलियर्ड को सोचने के लिए मजबूर किया। क्या इस प्रकार के मरीजों के हालात को थोड़ा सुधारा जा सकता है? क्या किसी जानवर को इन मरीजों की सहायता के लिए प्रशिक्षित किया जा सकता है? पहले उन्होंने चिंपैन्जी प्रजाति के बंदरों को, विकलांगों की सहायता के लिए चुना।

इस काम में बी.एफ.स्कनर नामक मनोवैज्ञानिक ने उनकी मदद की। स्कनर ने बहुत से जानवरों को उपयोगी काम करने के लिए प्रशिक्षित किया था। जब ये जानवर दिए आदेश का, सही पालन करते तब उन्हें एक पुरस्कार मिलता। डा. स्कनर ने, चिंपैन्जी इस्तेमाल करने की योजना को गलत बताया। चिंपैन्जी बड़े होकर 150-200 पौंड जितने भारी हो जाते हैं। बड़े होकर उनका गुस्सा भी काफी भयानक हो जाता है। इसलिए उन्होंने कापूचिन बंदरों को इस्तेमाल करने का सुझाव दिया।

डा. विलियर्ड को पता था कि बंदर होशियार होते हैं, उनमें प्राकृतिक जिज्ञासा होती है और हाथों के इस्तेमाल में, वे मनुष्यों जितने ही दक्ष होते हैं। उन्होंने चित्र देखे थे जिनमें कुछ सड़क छाप संगीतज्ञ बंदरों को वाद्ययंत्र बजाना सिखा देते हैं और फिर रास्ता चलते, सिक्कों की भीख मांगते हैं। उन्होंने पढ़ा था कि दक्षिण-पूर्वी एशिया में, बंदरों से, पेड़ों पर चढ़कर नारियल तोड़ने का काम भी लिया जाता है। फिर इन नारियलों को बाजार में जाकर बेच दिया जाता है।

डा. विलियर्ड ने कई बंदर विशेषज्ञों से सलाह ली और सभी ने कापूचिन बंदरों का नाम ही सुझाया। इनका छोटा आकार और सजग प्रकृति, विकलांगों की सेवा के लिए एकदम उपयुक्त होगी। क्योंकि यह बंदर हाथ से कुशल होते हैं और छोटी समस्याएं सुलझा सकते हैं, इसलिए डा. विलियर्ड को लगा कि वो इन बंदरों को क्वाड्रेप्लेजिक मरीजों के सहायकों के रूप में ट्रेन कर पाएंगी।

विली जैसे कापूचिन बंदर, मध्य और दक्षिणी अमरीका में पाए जाते हैं। वो आमतौर पर तीस साल तक ज़िंदा रहते हैं। इतने लंबे आयुकाल के कारण ही वो मनुष्यों के अच्छे साथी बनते हैं।

कापूचिन बंदरों का भार पांच से ग्यारह पौंड के बीच होता है और ऊंचाई लगभग 18 इंच होती है। इसलिए, अन्य बंदरों जैसे चिंपैन्ज़ियों की तुलना में कापूचिन बंदर इंसानी सहायकों के लिए अधिक उपयुक्त होते हैं। कापूचिन बंदरों की एक पूंछ भी होती है जो चिंपैन्ज़ियों में नहीं होती है। कापूचिन अपनी पूंछ को, हाथ-पैरों जैसे ही इस्तेमाल करते हैं। वो चाहें तो अपनी पूंछ से चीज़ों को उठा सकते हैं, पकड़ सकते हैं, या फिर काम करते और खेलते समय पूंछ से संतुलन बनाए रख सकते हैं।

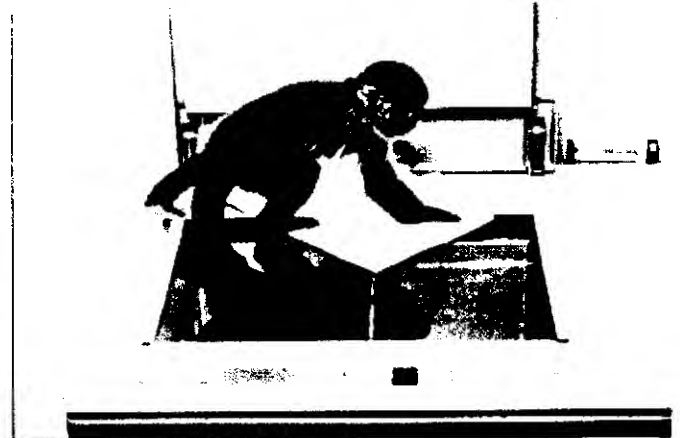
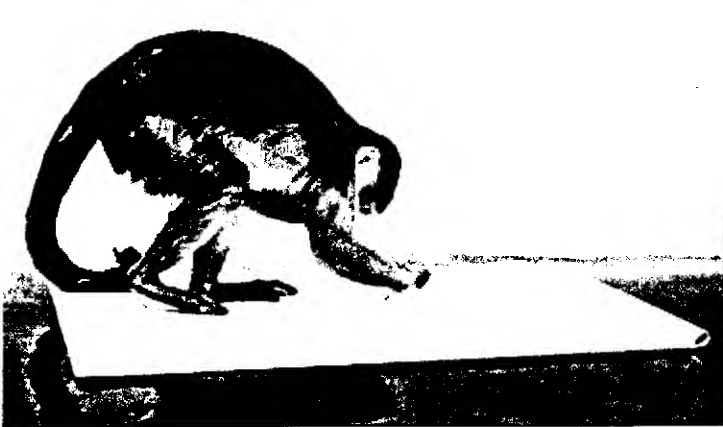
कापूचिन बंदरों के हाथ छोटे और उनकी लचीली उंगलियां एकदम मनुष्यों के हाथ से मिलती-जुलती होती हैं। वो बोटलों के ढक्कनों को घुमाकर खोल सकते हैं, पतले धागे को उठा सकते हैं और एक पेंसिल को पकड़ कर उसे कागज़ पर रगड़ सकते हैं।

कापूचिन छोटी-मोटी समस्याएं भी हल कर सकते हैं।

जंगल में एक कापूचिन बंदर एक सीपी (क्लैम-शैल) को खोल कर खाना चाहता था। इसके लिए उसने पहले सीपी को पत्थर से ठोका। फिर उसने सीपी को पत्थर पर ज़ोर से पटका। अंत में उसने एक डंडी को घुसाकर सीपी को खोला।



7



दूसरा बंदर मनुष्यों के एक परिवार में रहता था। एक दिन बाहर से आए परिवार के मित्र ने बंदर को एक चम्मच में कच्चा अंडा दिया। बंदर अंडा खाना चाहता था परंतु उसे अजनबी के पास जाने से डर लग रहा था। इसलिए उसने दूर से ही अपना हाथ बढ़ाकर चम्मच में अपनी उंगली डुबोई और फिर दूर जाकर उसे चखा।

कापूचिन काफ़ी होशियार भी होते हैं। लोगों को काम करते देख इस बंदर ने भी फोटोकॉपी मशीन को चलाना सीख लिया। वो प्रिंट का बटन दबाता और फिर बाहर निकलती ज़ेराक्स की प्रतियों को पकड़ता। वैसे उसे अभी कांच के ऊपर कागज़ रखना नहीं आता है।

बंदर भी बिल्कुल इंसान के बच्चों की तरह ही सीखते हैं - देखकर, नकल करके और खुद खोजबीन करके।

8

1977 में डा. विलियर्ड को 2000 डालर का अनुदान मिला। उन्होंने इसमें अपनी कुछ पूंजी जोड़ी और फिर अपना शोध शुरू किया। इन पैसों से वो चार बंदर, कुछ पिंजड़े और बंदरों के लिए खुराक खरीद सकीं।

उनके प्रोजेक्ट का नाम था **हैलिंग हैंड्स** यानि मददगार हाथ। बिना मुनाफे की यह संस्था आज, बौस्टन विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल के साथ जुड़ी है। आज इसको तमाम संस्थाएं और लोग अनुदान देते हैं। डा. विलियर्ड इतना पैसा इकट्ठा करना चाहती हैं जिससे कि हर वर्ष 40 से 50 बंदरों को क्वाड्रीप्लेजिक लोगों की सहायता के लिए ट्रेन किया जा सके।



जब डा. विलियर्ड ने अपना काम शुरू किया तब सबसे पहले उन्होंने कई चिड़ियाघरों और शोध संस्थाओं को लिखा और कापूचिन बंदरों की मांग करी। जिन बंदरों को उन्होंने सबसे पहले ट्रेन किया वे सभी व्यस्क थे यानि उम्र में बड़े थे। उनमें से कई पालतू थे और उनके मालिक अब उन्हें संभाल पाने में असमर्थ थे। इनमें से कई व्यस्क बंदरों के साथ लोगों ने गलत सलूक किया था। शायद उन्हें प्रयोगशालाओं में यातनाएं भी सहनी पड़ी थीं। इंसानों ने उनकी परवरिश ठीक तरह से नहीं की थी। इस वजह से इन बंदरों को इंसानों पर पूरी तरह विश्वास नहीं था।

डा. विलियर्ड को लगा कि अगर कापूचिन बंदरों के बच्चों को, बचपन से ही, प्यार-दुलार से इंसानी घरों में पाला जाए तो वे बड़े होकर अच्छी तरह सीखेंगे और इंसानों के साथ अच्छी तरह घुल-मिल जाएंगे और लोगों के साथ बेहतर तरीके से पेश आएंगे। व्यस्क कापूचिन बंदरों की आदतें पक्की हो चुकी होती हैं और उनमें सुधार करना मुश्किल होता है।



आजकल **हैलिंग हैंड्स** प्रोजेक्ट में जो बंदर आते हैं वो फ्लोरिडा, अमरीका में स्थित एक कालोनी से आते हैं। जन्म के समय कापूचिन बंदरों का वजन करीब 175 ग्राम यानि, एक औसत सेब जितना भारी होता है।

एक अन्य कार्यक्रम है **सीडिंग आईज** - यानि देखने वाली आंखें। इसमें कुत्ते के पिल्लों को मनुष्यों के परिवारों में रखा जाता है। थोड़ा बड़े होने पर इन कुत्तों को नेत्रहीनों की सहायता के लिए ट्रेन किया जाता है। इसी प्रकार हैलिंग हैंड्स के बंदरों को भी बचपन से ही मनुष्यों के घरों में रखा जाता है। डा. विलियर्ड का स्टाफ बड़ी सावधानी से ऐसे

परिवार को चुनता है। ऐसे परिवार में, छह से आठ हफ्ते की उम्र का कापूचिन बंदर का बच्चा, अपने पहले चार साल बिताता है।

बंदर के बच्चे के लिए मनुष्य के परिवार को किस प्रकार चुना जाता है? परिवार ऐसा हो जिसे जानवरों के प्रति प्रेम हो, इज्जत हो, और जो बंदरों की आवश्यकताओं को पूरा कर सके। परिवार के लोगों के पास इतना समय हो जिससे कि वो बंदर के बच्चे को गोदी में उठा सकें, उसके साथ खेल सकें और उसकी शौच-सफाई का ध्यान रख सकें। बंदर, एक दो बरस के इंसानी बालक की तरह ही सक्रिय होते हैं। उनका कुत्ते के पिल्लों और बिल्ली के बच्चों की अपेक्षा कहीं अधिक ध्यान रखना पड़ता है।

नन्हें-मुन्ने बंदर के बच्चों को, हरेक कुछ घंटों के बाद, बोतल से दूध पिलाना पड़ता है। जंगल में तो वो अपनी मां का दूध पीते हैं। परंतु शहर के घरों में उन्हें, इंसानी बच्चों को पिलाए जाने वाला डिब्बे का दूध ही पिलाया जाता है। इससे उन्हें अपने विकास के लिए सभी पौष्टिक तत्व मिल जाते हैं। जब बंदर का बच्चा दो महीने का होता है तो वो सारी रात, बिना बीच में उठकर दूध पिए, मजे से सो सकता है। इस उम्र में बंदर के बच्चों के पहले दांत आते हैं और वो सेब के टुकड़े और अंगूर भी खा सकते हैं। पांच-छह महीने की उम्र के बाद उनकी बोतल की आदत छुड़ा दी जाती है और उन्हें खाने में व्यस्क बंदरों का ठोस आहार दिया जाता है।

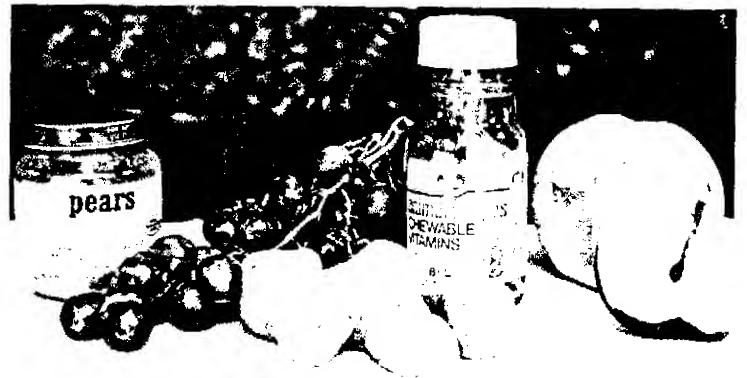
परिवारों में रह रहे थोड़े से बड़े बंदर, अखरोट के नाप के 10-20 बिस्कुट रोज़ाना खाते हैं। कारखानों में बने इन बिस्कुटों से बंदरों को संतुलित आहार मिल पाता है। व्यस्क कापूचिन बंदर आधा संतरा खाते हैं। पर उनका सबसे प्रिय आहार अंगूर और फल के टुकड़े हैं। **हैलिंग हैंड्स** के बंदरों को प्रतिदिन एक विशेष विटामिन की गोली भी खिलाई जाती है।

बंदरों को कीड़े-मकौड़े खाना भी अच्छा लगता है। परंतु इन कीड़ों को उन्हें खुद ही पकड़ना पड़ता है। विली कीड़े पकड़ने में काफ़ी उस्ताद है। वो अपने दोनों हाथों से हवा में मक्खियां पकड़ सकती है। परंतु विली को तिलचट्टे बिल्कुल नापसंद हैं।



11

जंगलों में मादा बंदर अपने बच्चे की सफ़ाई का पूरा ध्यान रखती है। वो बच्चे के शरीर पर बालों में से जूँए चुनती है, गंदगी और सूखी खाल के टुकड़ों को हटाती है। अगर कोई इस तरह बदन की सफ़ाई करे तो बंदरों को बहुत अच्छा लगता है। वो चुपचाप, एकदम शांत बैठे रहते हैं। ऐसा लगता है कि सफ़ाई करने, और कराने वाले दोनों को इसमें बड़ा मज़ा आता है।



परंतु इंसान के घरों में इन बंदरों को, एक स्पंज से रगड़कर नहलाया जाता है। जब बंदर की देखरेख करने वाला इंसान अपने सिर को तौलिया से रगड़ता है तो बंदर उसे बड़ी रुचि से देखता है। इस तरह रखवाला, बंदर को बताता है कि वो उसे किस तरह निहलाएगा। इससे बंदर नहाते समय डरेगा नहीं।

उसके बाद रखवाला बंदर को स्पंज से रगड़ कर निहलाता है। बंदर को इसमें बड़ा मज़ा आता है।

परिवार को बंदर की सेहत और सुरक्षा का पूरा ध्यान रखना चाहिए। बंदर को रोज़ाना पिंजड़े के बाहर कम-से-कम चार घंटे व्यायाम करवाना चाहिए। परिवार को बंदर को गोद में उठाकर उसे बार-बार प्यार करना चाहिए। इंसानों की तरह ही, बंदरों के लिए भी शरीर का स्पर्श बेहद ज़रूरी होता है।

छोटे बंदरों का मनुष्यों के साथ परिवार में रह कर अच्छा अनुभव हो सकता है। वो मनुष्यों के साथ घर के बाहर



घूमने जाने के आदी हो जाते हैं। वो इंसानों की संगत के अभ्यस्त हो जाते हैं। बंदर के रखवाले उसे छोटे-छोटे काम करने के लिए प्रेरित करते हैं जैसे - टिकट चेकर को बंदर टिकट थमाता है। बंदर खरीदे हुए सामान को थैली में रखता है। एक बंदर को तो पार्क में, कुत्ते की पीठ पर बैठकर सैर करने में मज़ा आता है।

किसी एक परिवार में चार साल रहने के बाद, परिवार और उसके पालतू जानवरों और कापूचिन बंदर के बीच एक गहरा रिश्ता पैदा हो जाता है। जब बंदर के घर छोड़ने का समय आता है तो यह सबके लिए बहुत दुखदायी अनुभव होता है। परंतु अब जल्दी ही यह बंदर किसी विकलांग की सहायता करेगा। जिस परिवार ने बंदर को चार साल पाला था उसे इस बात पर बहुत गर्व का अनुभव होता है। किसी ज़रूरतमंद की सहायता करने का आनंद ही कुछ अनूठा है। कुछ परिवार तो एक बंदर पालने के बाद तत्काल दूसरा बंदर गोद लेने के लिए अपना नाम दर्ज कराते हैं।

जब बंदर परिवार से, ट्रेनिंग सेंटर में आता है तो यहां उसकी मुलाकात बहुत से लोगों से होती है। सेंटर में बंदर को प्रशिक्षण देने का काम सिर्फ एक ही व्यक्ति करता है, परंतु बंदर को खाना खिलाने, उसके साथ खेलने और उसे नहलाने का काम अन्य लोग करते हैं।



जूड़ी जाजूला एक विशेषज्ञ हैं जो विकलांग लोगों के साथ काम में डा. विलियर्ड की सहायता करती हैं। उनकी मदद के लिए करीब एक दर्जन ट्रेनर भी हैं जिनमें से ज्यादातर कालेज के छात्र हैं। उनमें से कुछ का विषय मनोविज्ञान है और उनका मानना है कि बंदरों के साथ काम करने से उन्हें अपना विषय समझने में सहायता मिलेगी। उनमें से कुछ बाद में विकलांग बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। उन्हें बंदरों को सिखाने का काम छोटे बच्चों को सिखाने के समान लगता है। कुछ ट्रेनर ऐसे भी हैं जिन्हें जानवरों के साथ समय बिताने में बड़ा मज़ा आता है।

डा. विलियर्ड और मिस जाजूला को पता है कि बंदरों के साथ काम करने के लिए उन्हें एक खास तरह के लोग चाहिए और इसलिए वो बहुत जांच-परख के बाद ही ट्रेनर्स को चुनते हैं। “मैं चाहती हूं कि मेरे ट्रेनर्स चीजों को बंदरों के दृष्टिकोण से देखें। ट्रेनर्स में समस्याओं को सुलझाने की अच्छी कुशलताएं भी हों। वो सिखाने के तरीकों को इस प्रकार बदलें जिससे कि बंदरों को काम समझ में आ जाए।”

ट्रेनर्स संवेदनशील हों और उन्हें जानवरों से प्यार हो यह ज़रूरी है। वे यह समझें कि कब बंदर को छूट देनी है और कब उसके साथ सख्ती बरतनी है। वो हरेक बंदर के खास गुणों को भी समझें। बंदर को क्या अच्छा और क्या बुरा लगता



हैं, यह समझने पर ही ट्रेनर, अपना काम अच्छी तरह कर पाएंगे। “हमें एकदम बंदर की तरह ही सोचना पड़ता है”, एक ट्रेनर ने कहा। “हमें ज़मीन पर लोटने और कपड़े गंदे करने का भी कोई भय नहीं रहता। खाते समय बंदर आपके पूरे शरीर पर खाना बिखरा देंगे”।

अक्सर एक बंदर के लिए एक ट्रेनर नियुक्त किया जाता है, जो रोज़ना बंदर को कुछ सिखाता है। यह सबक रोज़ एक घंटे तक चलता है। परंतु हरेक बंदर की, सीखने की अपनी एक खास गति होती है। इसलिए हरेक बंदर की ज़रूरत के हिसाब से ही उसकी पढ़ाई तय की जाती है। किसी एक समय पर 15 से 20 बंदरों को ही ट्रेन किया जाता है। सीखने की पूरी प्रक्रिया में करीब छह महीने का समय लगता है।

शुरू के पढ़ाई एक छोटे कमरे में होती है। कमरा छोटा होने के कारण कापूचिन बंदर का ध्यान इधर-उधर कम भटकता है और वो अपने पाठ पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। बाद में बंदर की ट्रेनिंग एक ऐसे जगह पर होगी जो विकलांग मरीज़ के घर से काफ़ी कुछ मिलती-जुलती होगी।

किसी भी बंदर को सिखाना एक ट्रेनर के लिए बड़ा चुनौती भरा काम होता है। केवल आदेश देने से ही बंदर बताए काम को नहीं करता है। बंदर तभी सहयोग करेगा जब काम करने में उसका भी कोई स्वार्थ जुड़ा होगा।

फलों की खुशबू वाला बिस्कुट का टुकड़ा या मूमफली के मक्खन का लालच ज़रूर बंदर को काम करने के लिए प्रेरित कर सकता है। इन्हीं तरीकों



15

से बंदर को काम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। डा. विलियर्ड के बंदरों को सही-जवाब-फिर-ईनाम के सिद्धांत पर प्रशिक्षित किया जाता है। हर बार जब कापूचिन बंदर सही जवाब या काम करता है तो उसे उसका प्रिय भोजन दिया जाता है और साथ में शाबाशी भी जैसे, “वाह बहुत अच्छा किया, बहुत खूब आदि”। अंत में बंदर सही काम के लिए कुछ पुरस्कार की आशा भी करेगा।

पहले कुछ दिनों में बंदर सही-जवाब-फिर-ईनाम के तरीके को समझता है। कमरे में बंदर को खोजने और खेलने की पूरी छूट होती है। हर चंद मिनटों के बाद ट्रेनर एक घंटी बजाता है और फिर बंदर को कुछ खाने को देता है। जब इस प्रक्रिया को कई दर्जन बार दोहराया जाता है तो बंदर समझ जाता है कि हर बार घंटी बजने के बाद उसे कुछ खाने को मिलेगा।

फिर ट्रेनर, बंदर की ट्रेनिंग शुरू करता है, यानि बंदर को क्या करना है यह उसे दिखाता है। अगर बंदर काम को सही प्रकार करता है तो ट्रेनर घंटी बजाता है। अगर बंदर ने काम ठीक तरह से नहीं किया तो घंटी नहीं बजती है और बंदर को ईनाम भी नहीं मिलता है। घंटी की आवाज़ और ईनाम, दोनों से, बंदर को यह पता चल जाता है कि उसने काम को सही तरह से किया या नहीं।

आगे की ट्रेनिंग में घंटी को हटा दिया जाता है और उसकी जगह शाबाश! बहुत खूब! जैसे शब्दों को इस्तेमाल किया जाता है।



बिल्लियों और कुत्तों की तरह ही बंदर भी, मनुष्यों के कुछ सरल शब्द और इशारे समझते हैं। इसलिए ट्रेनर बंदर से काम करवाते समय, जानबूझ कर कुछ सरल से शब्दों का ही उपयोग करते हैं। विकलांग व्यक्ति को भी बंदर से कुछ भी, काम करवाने के लिए, उन्हीं शब्दों का इस्तेमाल करना पड़ेगा।

हैलिंग हैन्ड्स में, बंदरों की ट्रेनिंग, सरल सबक सीखने से शुरू होती है। जिस प्रकार इंसान के बच्चे पैरों पर चलने से पहले रेंगना सीखते हैं उसी प्रकार बंदर भी इन सरल चीजों को सीखकर ही भविष्य में, मुश्किल दिखने वाले काम कर पाएगा।

ट्रेनिंग केंद्र में, जो पहला काम बंदरों को सिखाया जाता है वो है - चीजों को लाना। बंदर से पहले कोई साधारण सी चीज उठाने को कहा जाता है। यह कोई भी वस्तु हो सकती है। इसके लिए अक्सर वाश-बेसिन के सिंक में लगने वाला रबर का स्टापर इस्तेमाल किया जाता है। इसके दो कारण हैं - एक तो उसका आकार एकदम स्पष्ट होता है और दूसरा उसका टूटने का कोई डर नहीं होता।

ट्रेनर प्रत्येक काम को छोटे भागों में बांट देता है और फिर वो बंदर को उनके करने की विधि दिखाता है। बंदर बड़ी होशियारी से इंसानों की नकल करते हैं इसलिए बंदरों को काम सीखने में बहुत अधिक समय नहीं लगता है।

कोई नई बात दिखाते समय ट्रेनर हमेशा पहले बंदर का नाम पुकारता है और फिर कहता है, “करो!”



पहले वो बंदर को रबर के स्टापर को एक छोटे डिब्बे में रखना दिखाता है। एक घंटा रोजाना अभ्यास करने के बावजूद भी बंदर को यह सीखने में कई दिन लग जाते हैं। फिर ट्रेनर डिब्बे में अपने हाथ को डालता है और बंदर से स्टापर को उसके हाथ पर रखने को कहता है। अंत में ट्रेनर डिब्बे को हटा देता है और बंदर को ट्रेनर के हाथ पर स्टापर को रखना होता है। जब बंदर इस काम को बार-बार करके, उसमें निपुण हो जाता है तब उसे आगे के सबक सिखाए जाते हैं।

पढ़ाई के अंतिम दौर में बंदर, वो काम सीखेगा जिन्हें वो, विकलांग व्यक्ति की मदद के लिए करेगा। ट्रेनिंग सेंटर में कोई स्टाफ झूठ-मूठ का विकलांग व्यक्ति (क्वाड्रीप्लेजिक) बन जाता है और व्हील-चेयर पर बैठ जाता है और बंदर से लैप-बोर्ड (व्हील-चेयर की मेज) पर से नीचे गिरी चीजें जैसे किसी पुस्तक को उठाने को कहता है। व्हील-चेयर पर बैठा व्यक्ति पहले बंदर का नाम पुकारेगा और फिर कहेगा, “उठाओ”। तब बंदर पुस्तक को उठाकर लैप-बोर्ड पर रख देगा।

जब बंदर यह काम सफलतापूर्वक कर लेता है तो वो सचमुच में एक मददगार हाथ बन जाता है।





क्वाड्रेप्लाजिया के मरीज केवल शब्दों के आदेश दे सकते हैं। वे अपने हाथ-पैर से, जिस चीज को उठाना है, उसकी ओर इशारा नहीं कर सकते। न ही वो हाथ के इशारे से यह बता सकते हैं कि चीज को उठाकर कहां पर रखना है। इसके लिए डा. विलियर्ड ने क्वाड्रेप्लेजिया के मरीजों के मुंह के पास एक छोटा सा लेजर फिट करने की सोची। यह मरीज अपने मुंह से खुद ही, व्हील-चेयर को नियंत्रित करते हैं।

लेजर में एक आठ इंच लंबी नली होती है। इस नली में एक नियंत्रण छड़ी होती है जोकि पेंसिल की लेड जितनी मोटी होती है। मरीज इस छड़ी के सिरे को मुंह में पकड़कर उससे लेजर को नियंत्रित करता है। लेजर की रोशनी जिस वस्तु से टकराती है वो उस पर एक लाल बिंदु बनाती है। मरीज, पहले लेजर को उस वस्तु पर चमकाता है जो उसे चाहिए और फिर उस स्थान पर जहां वो चाहता है कि बंदर चीज को रखे।

लेजर निशान वाली चीज को उठाने से पहले यह जरूरी है बंदर को लेजर की अभ्यस्तता हो। शुरू में जिस चीज पर भी लेजर चमकाई जाए बंदर उसे उठा कर के लाए। आरंभ में बंदर केवल लेजर के लाल निशान की ओर ही दौड़ेगा और उसे पकड़ने की कोशिश करेगा। कुछ बंदर तो लेजर के बिंदु को पकड़कर उसे खाने लग जाते हैं!

पहले ट्रेनर, लेजर को, तीन बोतलों में से, बीच वाली पर चमकाता है और बंदर को उसे लाने को कहता है। अगर बंदर बीच की सही बोतल को चुन कर उठाकर लाएगा तो उसे इनाम के रूप में एक मीठा अंगूर मिलेगा। अगर वो गलत बोतल चुनेगा तो उसे पुरस्कार नहीं मिलेगा। परंतु ट्रेनर, बंदर को, सही काम करने के लिए बार-बार मौका देगा।

19



अक्सर क्वाड्रीप्लेजिया के मरीज अपने बंदर सहायकों से कोई पीने वाली चीज मांगते हैं। किसी बोतल या बर्तन में प्लास्टिक की नली (स्ट्रॉ) डालना एक ऐसा महत्वपूर्ण काम है, जो बंदर आसानी से सीख सकते हैं।

इसके लिए पहले बंदरों को बोतल में दो इंच लंबी स्ट्रॉ डालने का अभ्यास कराया जाता है। जब बंदर इस छोटी नली को डालने में माहिर हो जाते हैं तब उन्हें थोड़ी बड़ी - चार इंच लंबी नली डालने का अभ्यास कराया जाता है। पाठ के अंत में उन्हें पूरी लंबाई की नलियां डालने का अभ्यास करना होगा।

यह बंदर एक लंबी नली को डिब्बे में डाल पाया है। अब कोशिश यह की जाएगी कि वो डिब्बे में एक लचीली प्लास्टिक की नली डाल पाए। क्वाड्रीप्लेजिया के मरीजों के लिए लचीली नली इस्तेमाल करना ज्यादा आसान होगा।

आधी ट्रेनिंग पूरी होने के बाद, जिस मरीज़ की मदद करनी है उसके साथ ही बंदर को रखा जाता है। जूड़ी इस बात की कोशिश करती हैं कि मरीज़ के व्यक्तित्व और ज़रूरतों और बंदर के बर्ताव और कुशलताओं के बीच अच्छा तालमेल हो। कुछ बंदर, एक काम को दूसरे बंदरों की तुलना में ज़्यादा अच्छी तरह कर पाते हैं – बिल्कुल इंसानों की तरह। मिसाल के लिए एक बंदर, लेज़र के निशान समझने में ज़्यादा तेज़ था, शब्दों के आदेश समझने में कम। जूड़ी जाज़ोला की मरीज़ सूची में एक ऐसा क्वाड्रीप्लेजिक भी था जो मस्तिष्क में चोट के कारण बोल नहीं सकता था। इन दोनों की जोड़ी बड़ी अच्छी रही। जब कभी इस व्यक्ति को कुछ चाहिए होता है तो वो कुछ बोलने की बजाए, व्हील-चेयर से लगी सीटी बजाता है और फिर उसे जो चीज़ चाहिए होती है उसे लेज़र के लाल निशान से बताता है।

बंदर को वही खास कुशलताएं सिखाई जाती हैं जिनसे वो क्वाड्रीप्लेजिया के मरीज़ की सहायता कर सके। कापूचिन बंदर आसानी से नीचे दी हुई कुशलताएं सीख सकते हैं :-

बल्ब जलाना और बंद करना।

दरवाज़ा बंद करना और खोलना।

मुंह से गिर पड़ी छड़ को उठाना।

टेलीवीजन चलाने के लिए रिमोट-कंट्रोल को उठा कर लाना।

खुजली वाले स्थान को एक नर्म कपड़े से, हल्के-हल्के रगड़ना।

पत्रिका या किताब उठाकर लाना।

21

विडियो टेप उठाकर लाना और वी.सी.आर. में लगाने के लिए उसे सही स्थिति में रखना।

संगीत का औडियो-कैसेट उठाकर लाना और उसे कैसेट-प्लेयर में लगाना।

ठंडे पेय की बोतल को उठाकर लाना, उसे सही स्थान पर रखकर खोलना।

कम्प्यूटर की डिस्क को लाना और लगाना।

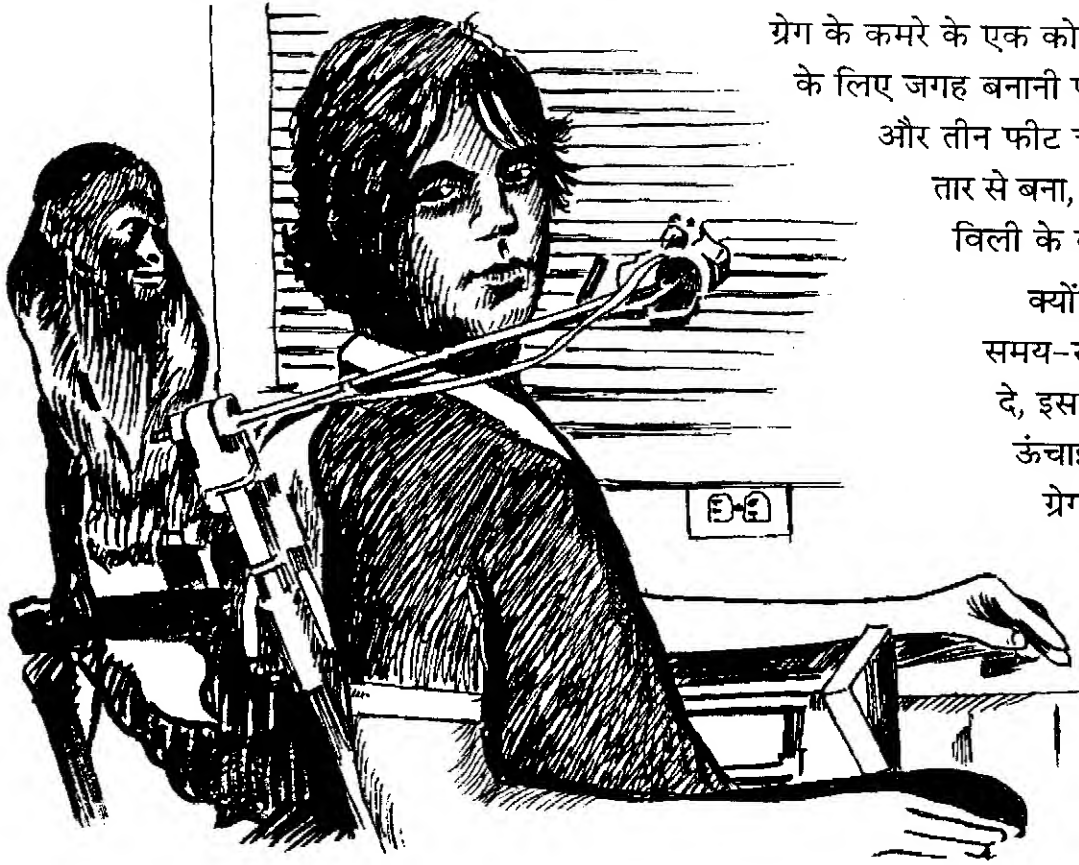
अपने पिंजड़े के अंदर जाना।

फ्रिज में से जाकर सैंडविच निकालना उसे माईक्रोवेव पर गर्म करके, प्लेट में रखना।

हैल्पिंग हैन्ड्स में, बंदरों को, क्वाड्रीप्लेजिया के मरीज़ जो काम नहीं कर पाते हैं, वो थोड़ा सा काम ही सिखाया जाता है। उदाहरण के लिए बंदर कैसेट-प्लेयर में औडियो-कैसेट को केवल डालने का काम करेगा। वैसे बंदर को कैसेट-प्लेयर चलाना भी सिखाया जा सकता है, परंतु यह काम मरीज़ खुद, मुंह की छड़ी से, बटन दबाकर करेगा।

जब बंदर अपनी ट्रेनिंग खत्म करते हैं तो उन्हें कोई सर्टिफिकेट नहीं मिलता है और न ही उनके सम्मान में कोई उत्सव होता है। परंतु बंदरों को अब एक नया घर मिल जाता है और एक ऐसा इंसान मिलता है जिसे मदद की ज़रूरत है। आम घरों में लोग कुछ पालतू जानवरों की देखभाल करते हैं। परंतु **हैल्पिंग हैन्ड्स** के बंदरों को, ज़रूरतमंद इंसानों की मदद करनी होती है।

जब विली की ट्रेनिंग खत्म हुई तो वो ग्रेग के साथ रहने के लिए गई। विली के घर आने से पहले ग्रेग और उसके परिवार का विली के लिए कुछ विशेष तैयारियां करनी पड़ीं।



ग्रेग के कमरे के एक कोने में, विली का पिंजड़ा रखने के लिए जगह बनानी पड़ी। पिंजड़ा सात फीट ऊंचा और तीन फीट चौड़ा और लंबा था। लोहे के तार से बना, विशेष प्रकार का यह पिंजड़ा, विली के बेडरूम का काम करेगा।

क्योंकि ग्रेग चाहता था कि विली समय-समय पर उसे कुछ ठंडा पेय दे, इसलिए उसने कमरे में एक कम ऊंचाई वाला फ्रिज भी लगवाया।

ग्रेग को अपनी व्हील-चेयर में एक फूड डिस्पेंसर (खाना खिलाने की मशीन) और एक लेजर भी लगवाना पड़ा। फूड डिस्पेंसर से ग्रेग, विली को अच्छा काम करने के लिए ईनाम दे पाएगा।

23



अगर विली कोई ऐसी वस्तु को छूती जिसपर सफेद स्टिकर लगा होता तो उसे एक तेज सुर की आवाज़ सुनाई देती। मिसाल के लिए, विली के लिए दवा की अल्मारी को छूना मना था। उन दवाओं से विली को नुकसान हो सकता था। ग्रेग की व्हील-चेयर के पास एक स्पीकर और बटन लगा हुआ था। बटन दबाते ही स्पीकर में से एक तेज आवाज़ निकलती। यह आवाज़ बंदर को परेशान करती है और इसे सुनकर वो जो कुछ भी काम कर रहा होता है उसे तुरंत छोड़ देता है। वैसे मनुष्यों पर इस आवाज़ का कोई खास असर नहीं होता है।

जब ग्रेग के कमरे में यह सब तैयारियां हो चुकीं तभी विली को लाया गया। दुर्घटना के दो साल बाद अब ग्रेग उस बंदर साथी का इंतजार कर रहा था जिसके साथ वो अपनी आगे की काफी जिंदगी बिताएगा।

ग्रेग के घर आते समय, विली कार में अपने ट्रेनर के पास आगे वाली सीट पर बैठी। हर चंद मिनटों के बाद वो अपनी सीट के ऊपर चढ़कर कार की खिड़की में से झांकती। ग्रेग के घर पहुंचने के बाद विली अपने ट्रेनर के कंधे पर चढ़कर बैठ गई। जिससे वो गिरे नहीं इसलिए उसने अपनी पूंछ को ट्रेनर के गले में मफलर जैसे लपेट लिया।

ग्रेग के कमरे में आने के बाद ट्रेनर ने, विली को, सबसे पहले उसके पिंजड़े में रखा। ट्रेनर को पता था कि पिंजड़े में विली, खुद को, अधिक सुरक्षित महसूस करेगी। ग्रेग से कुछ देर चर्चा करने के बाद, और कुछ समय बाद वापिस आने का वायदा करके ट्रेनर वहां से चली गई।

24

डा. विलियर्ड के अनुसार बंदर को अपने नए घर से अवगत होने में और वहां पूरी तरह सुरक्षित महसूस करने में एक हफ्ते से दो महीने तक का समय लग सकता है। बंदर को अपने नए माहौल में घुलने-मिलने में कितना समय लगेगा, यह बंदर के अपने व्यक्तित्व पर निर्भर करेगा।

एक हफ्ते तक विली अपने पिंजड़े में से बाहर ही नहीं निकली। पिंजड़े से बाहर निकलने के लिए विली को बाहर आकर खाने का लालच दिया गया। वो अक्सर खाने को झपटती और फिर जल्दी से अपने पिंजड़े के अंदर वापिस जाकर उसे खाती।

अपने नए परिवेश के साथ रिश्ता जोड़ने के दौरान ग्रेग के परिवार ने विली को एक रबर का सीटी वाला खिलौना दिया। इस विली हमेशा अपनी पूंछ से पकड़ कर रखती। वो अक्सर सोते समय भी इस खिलौने को अपने साथ लेकर जाती।

विली अब अधिक आश्वास्त दिखाई पड़ रही है और वो अपनी दिनचर्या को भी अच्छी तरह जानती है। जो काम विली को बार-बार करने पड़ते हैं वे हैं — ग्रेग के मुंह में छड़ी डालना, या फिर उसको कुछ पीने के लिए देना, या फिर ग्रेग के पढ़ने के लिए किताब उठा कर देना।

विली का शरीर काफी छोटा सा है। अक्सर बच्चे तार से इस नाप और आकार के मॉडल बनाते हैं। जब विली काम करती है तो उसके लंबे हाथ और पैरों से उसके काम करने की गति और तेज नज़र आती है।

ऐसा नहीं है कि विली अजनबियों को देखकर शर्माती हो। एक दिन एक महिला ग्रेग से मिलने के लिए आई। उनके हाथ में कुछ रंगीन फोटोग्राफ थे। क्योंकि विली को वो चित्र देखने थे इसलिए वो झट से उस महिला के पास



गई। उसने उसका हाथ पकड़कर हिलाया। विली को न तो कोई शर्म है और न ही वो हमेशा सदाचार से पेश आती है।

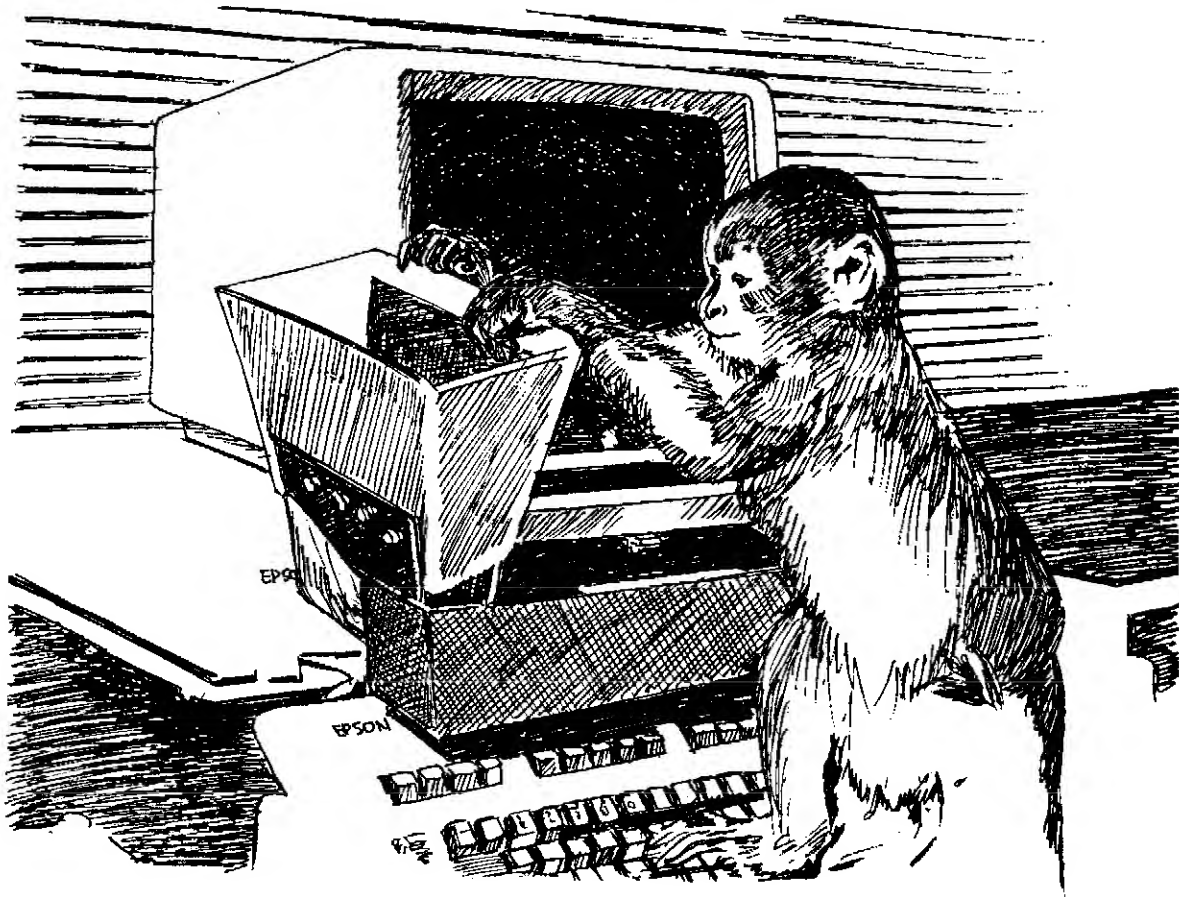
किसी को भी यह पता नहीं था कि विली पर, घर के पालतू कुत्ते ट्रेपर की, क्या प्रतिक्रिया होगी। शुरू में कुत्ते को विली से अवश्य कुछ परेशानी हुई। जब कभी भी कुत्ता विली के पास गया, विली ने उसे धक्का देकर हटा दिया। परंतु अब दोनों में अच्छी दोस्ती है। ट्रेपर अक्सर विली को सूंघता है और विली उसे देखकर नजरंदाज़ करती है।

जब विली अपने नए घर की अभ्यस्त हो गई तब ट्रेपर वापिस आई और उसने ग्रेग को शब्दों के वो आदेश बताए जिन्हें विली समझती थी और जिनका पालन वो करती थी। उसके बाद ग्रेग और विली ने साथ में काम करना शुरू कर दिया।

विली के कुछ दिन अच्छे और कुछ दिन खराब बीतते हैं। कभी-कभी उसे चीजों को ठीक प्रकार से कर पाना बहुत

मुश्किल लगता है।
कभी-कभी औडियो-
कैसेट को कैसेट-प्लेयर
में लगाना भी उतना
आसान नहीं होता है।
परंतु विली सफल होने
तक लगातार कोशिश
करती रहती है।

विली डिस्क को ट्रे
में से निकालकर
कम्प्यूटर के पास सही
स्थिति में रखती है।
बाद में ग्रेग उसको मुंह
की डंडी से डिस्क
ड्राइव में घुसा देता है।
फिर वो काम करने को
तैयार हो जाता है।



ग्रेग की मेज़ पर एक पुस्तक स्टैंड है। स्टैंड के एक ओर कब्जा लगा है, जिससे कि जब उसका इस्तेमाल नहीं हो रहा हो तब उसे चपटा करके लिटाया जा सके।

स्टैंड के ऊपर एक गोल चुम्बक लगा है। ग्रेग की पत्रिकाएं गत्ते की फाईलों में रखी हैं। हरेक फाईल के ऊपर एक धातु की चकती लगी है। आदेश मिलने पर विली पत्रिका को उठा कर लाती है और फाईल पर लगी धातु की चकती को चुम्बक से चिपका देती है। चुम्बक के कारण फाईल अपनी जगह पर टिकी रहती है।

फिर विली स्टैंड को सीधा खड़ा कर देती है और ग्रेग के पढ़ने के लिए पत्रिका के पन्नों को पलटती है।

जब ग्रेग को प्यास लगती है तब वो विली से कहता है, “विली, दरवाज़ा”। तब विली, फ्रिज के छोटे दरवाज़े को जाकर खोलती है। फिर ग्रेग, फ्रिज में रखी किसी एक बोतल पर लेज़र को चमकाता है और कहता है, “विली, लाओ”। विली फलों के जूस से भरी प्लास्टिक की बोतल को निकालकर ग्रेग की मेज़ तक लाती है। वो बोतल को मेज़ के पास लगे एक विशेष होल्डर में रखती है। फिर वो बोतल का ढक्कन खोलती है। उसके बाद वो बोतल में एक प्लास्टिक की नली डालती है। अंत में ग्रेग अपनी व्हील-चेयर को नली के पास लाता है और फलों का रस पीता है।



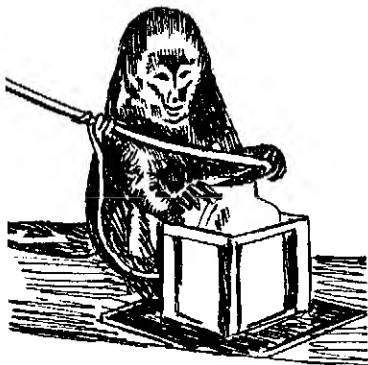
29



विली और भी काम करती है। वो फ्रिज में रखी हुई सैंडविच निकाल कर लाती है और उन्हें ग्रेग की मेज़ से लगे एक विशेष होल्डर पर लाकर रखती है। जब सैंडविच सही स्थान पर रखी होती है तभी ग्रेग उसे खा सकता है।

अक्सर विली चम्मच से ग्रेग को खाना खिलाती है। वैसे ग्रेग को खाना खिलाने के लिए इंसानी सहायता ज़्यादा पसंद है। विली अक्सर चम्मच को एक ओर झुका देती है जिससे कि खाना गिर जाता है। कई बार विली चम्मच से ग्रेग को खिलाने की बजाए खुद खाने लगती है।

विली को अपने पिंजड़े का दरवाज़ा खोलना, अंदर जाना और बाद में दरवाज़े को बंद करना सिखाया गया है। जब कभी ग्रेग चाहता है कि विली अपने पिंजड़े में जाए तो वो विली से कहता है, “विली, पिंजड़ा” और विली उसकी बात



मानती है। जब पिंजड़े का दरवाज़ा बंद होता है तो उसमें अपने आप ही ताला लग जाता है।

रात को सोने के समय ग्रेग कहता है, “विली, पिंजड़ा,” और तुरंत विली अपने पिंजड़े में चली जाती है। जब कमरे में अंधेरा हो जाता है और विली सोने के लिए तैयार होती है तब वो एक लंबी तौलिया से खुद को ढंक लेती है और फिर आठ से बारह घंटों के लिए आराम करती है।

दिन के समय, जब ग्रेग व्हील-चेयर पर होता है तब विली कमरे में मुक्त होकर घूमती है और ग्रेग की मदद के लिए हमेशा मौजूद रहती है। क्योंकि ज्यादातर कामों में केवल चंद सेकेंड ही लगते हैं इसलिए अधिकांश समय विली खाली ही रहती है।

खाली समय में विली अपने खिलौनों से खेलती रहती है। वो अक्सर ग्रेग के लैप-बोर्ड पर आकर बैठ जाती है। वैसे वो तमाम गतिविधियों और मजेदार खेलों में अपने आपको व्यस्त रखती है। विली के सबसे प्रिय खिलौनों में एक कार की पुरानी चाभी है और एक गुब्बारा है। परंतु उसे तमाम अन्य चीजों में भी मज़ा आता है।

अगर उसे कहीं पर एक कागज़ का टुकड़ा मिल जाए तो वो घंटों उसको पकड़ने के लिए भागती-दौड़ती है। अगर उसे कहीं से एक बर्फ का टुकड़ा मिल जाए तो उसके साथ खेलने में विली को अपार आनंद आता है। बस दुख इस बात का है कि बर्फ का टुकड़ा कुछ देर के बाद घुल कर गायब हो जाता है!

और कभी-कभी ग्रेग के परिवार के लोग, विली के लिए, साबुन के घोल के बुलबुले बनाते हैं। विली उन्हें पकड़कर खाने की भरसक कोशिश करती है।

अगर घर में स्थाई तौर पर एक बंदर रह रहा हो तो कभी-कभी ऐसी अनहोनी घटनाएं भी हो जाती हैं जिनके



बारे में पहले से अंदाज़ा लगाना मुश्किल है। एक बार घर के सभी सदस्य बाहर गए थे। विली के पिंजड़े का दरवाज़ा अच्छी तरह से बंद नहीं हुआ था। विली अपने पिंजड़े में से बाहर निकल आई। ग्रेग के अनुसार, “विली को हम भर पेट खाना खिलाते हैं फिर भी विली को घर में खाना कहां रखा है यह अच्छी तरह पता है। उस दिन जब मेरा भाई वापिस आया तो उसने विली को कमरे की छत की कैची पर बैठे पाया। उसे यह देखकर काफी ताज़्जुब हुआ। उसने तुरंत विली को उसके पिंजड़े में बंद किया और फिर वो चौके (किचिन) में गया। तब उसे असली आश्चर्य हुआ। किचिन की एकदम खराब हालत थी। फ्रिज का दरवाज़ा पूरी तरह से खुला था और सभी तरफ टूटे हुए अंडे बिखरे पड़े थे। किचिन की सभी अल्मारियां खुली पड़ी थीं और सभी ओर केक-पेस्ट्री, केले आदि के टुकड़े बिखरे पड़े थे। उसके बाद से हम लोग इस बात का पूरा ध्यान रखते हैं कि अगर हम कहीं बाहर जाएं तो विली अपने पिंजड़े में अच्छी तरह से बंद हो।”

विली जो कुछ भी काम कर सकती है उस पर ग्रेग को गर्व है। ग्रेग का कहना है, “वो मेरे लिए मददगार हाथों से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण है। मैं अपना पूरा दिन, हर रोज, व्हील-चेयर पर ही बिताता हूँ। मेरे माता-पिता में से एक मुझे अक्सर गाड़ी में बैठाकर दोस्तों के पास या सिनेमाघर घुमाने के लिए ले जाते हैं। परंतु अब मुझे अपना अधिकांश समय घर पर ही बिताना पड़ता है। विली मुझे कुछ सोचने के लिए मजबूर करती है। जब कभी भी विली अपने पिंजड़े के बाहर होती है तो मैं उसे देखता रहता हूँ कि वो क्या कर रही है।”

ग्रेग अपनी प्यारी विली को घर के बाहर नहीं ले जाता है। परंतु जो क्वाड्रेप्लेजिया के मरीज अपने बंदरों को पार्क या बाजार घुमाने के लिए ले जाते हैं उन्हें अजनबी लोग अधिक ध्यान से देखते हैं।



कुछ लोगों को व्हील-चेयर में विकलांग लोगों के साथ बातचीत करने में थोड़ी हिचक होती है। सामान्य लोगों को समझ में ही नहीं आता है कि वो क्या कहें, इसलिए वो चुपचाप ही रहते हैं। इस प्रकार आम लोग व्हील-चेयर और उस पर बैठे इंसान दोनों को नज़रंदाज़ कर देते हैं। अगर क्वाड्रेप्लेजिया के मरीज के पास बंदर होगा तो अजनबी लोगों का ध्यान पहले बंदर की ओर केंद्रित होगा और शायद थोड़ी देर बाद वो व्हील-चेयर पर बैठे इंसान से भी आंखें मिलाएं और बातचीत करें। बातचीत की शुरुआत करते समय शायद कोई अजनबी पूछे इस बंदर का नाम क्या है? या फिर यह बंदर तुम्हारे पास कितने समय से है? इसी प्रकार के सवाल अक्सर पूछे जाते हैं। उसके बाद ही कुछ और सवाल उठते हैं। और कुछ ही समय बाद क्वाड्रेप्लेजिया का मरीज और अजनबी मजे में गप्पे लगा रहे होते हैं।

